B.com. II   Paper- IV - Specialised Account (H)

By. Sujeet Kr. Suman
R. N. C.

Q No-2 → बैंक पुस्तपालन की पर्ची की पद्धति को स्पष्ट कीजिए। इस पद्धति के गुण - दोषों का वर्णन करें?

उत्तर

बैंक की पुस्तकों में लेखे करने की दोहरा लेखा प्रणाली अपनायी जाती है। बैंक में लेखा करने के लिए पुरजी पद्धति (Slip System) बहुत प्रसिद्ध है। इस पद्धति के अनुसार पुरजियों के आधार पर खाताबही में लेखे किये जाते हैं। जब कोई ग्राहक अपना रुपया बैंक में जमा करना चाहता है तो उसे एक पुरजी ₹ जमा करने के लिए भरनी पड़ती है जिसे जमा की पूंजी [illegible] (Pay-in-slip) कहते हैं। इस पुरजी को भरने के बाद इसे संबंधित अधिकारी को दिया जाता है। वह अधिकारी इसके प्रतिपर्ण (counterfoil) पर अपने हस्ताक्षर करता है और मोहर लगाकर इसे ग्राहक को वापस कर देता है। पुरजी का जो भाग अधिकारी अपने पास रख लेता है उसे रोकड़िया के पास भेज दिया जाता है। रोकड़िया इसी आधार पर रोकड़ पुस्तक में लेखे करता है। रोकड़िया के पास यह पुरजी खाता बहियाँ रखने वाले के पास भेजी जाती है। खाताबही में ग्राहक के लेखे को इस पुरजी के आधार पर जमा किया जाता है। खातापालक के पास यह पुरजी उस क्लर्क के पास भेजी जाती है जो कि पासबुक में लेखे करता है, इसी के आधार पर पासबुक में लेखा किया जाता है। यह पद्धति एक खाते से दूसरे खाते में रकम हस्तान्तरित करने के लिए भी प्रयोग की जाती है।

डे बुक के स्थान पर स्लिप्स के आधार पर पोस्टिंग की जाती है। इस प्रणाली को स्लिप सिस्टम कहा जाता है। इसे 'यूनिट मीडिया ऑफ पोस्टिंग' भी कहा जाता है

* बैंक पुस्तपालन पुरजी पद्धति के गुण :—

(a.) लेखों में सुविधा होना → चूँकि बैंक में प्रत्येक व्यवहार का लेखा कई पुस्तकों में किया जाता है इसलिए पुरजी पद्धति ही सुविधाजनक होती है। मान लीजिए यदि पुरजी पद्धति का प्रयोग न किया जाय तो बैंक में प्रत्येक व्यवहार का लेखा पहले एक पुस्तक में किया जायेगा और फिर इसी पुस्तक को विभिन्न क्लर्कों के पास इनसे संबंधित लेखे करने के लिए भेजा जायेगा और चूँकि बैंक में व्यवहार बहुत जल्दी-जल्दी होते हैं। इसलिए व्यवहारों की प्रारम्भिक पुस्तक को इधर-उधर बार-बार ले जाने में असुविधा तो होती ही है और साथ ही लेखे शीघ्र नहीं लिखे जा सकते हैं।

(b.) बैंक के व्यवहारों का उचित रीति से विभाजन सम्भव होना — प्रत्येक बैंक के लिए अपनी स्थिति को ठीक प्रकार रखने के लिए आवश्यक है कि वह अपने व्यवहारों को उचित रीति से विभाजन करे ताकि जमा और नाम की स्थिति किसी भी समय मालूम की जा सके। पुरजी पद्धति बैंक के विभिन्न व्यवहारों का ठीक प्रकार से विभाजन करने में अत्यंत सहायक होती है।

(c.) समय की बचत → चाहे बैंक में ₹ जमा किया जाय, या बैंक से ₹ उधार लिया जाय, या बैंक से ₹ निकाला जाय — इन तीनों दशाओं में ग्राहकों को पुरजी भरनी पड़ती है। इस पुरजी के विभिन्न रूप होते हैं, ऐसा होने से बैंक कर्मचारियों का समय नष्ट नहीं होता है।

(d.) अंकेक्षण में सहायक होना → अंकेक्षक हिसाब-किताब की पुस्तकों में किये गये लेखों को तब तक प्रमाणित नहीं करता है जब तक वह उन लेखों से संबंधित प्रमाण प्राप्त न कर ले। यह पुरजियाँ बैंक के लेखों के लिए प्रमाणकों का कार्य करती है। चूँकि यह ग्राहकों द्वारा भरी जाती है इसलिए अंकेक्षक इन्हें अधिक मान्यता देता है।

Scanned with CamScanner

(e) लेखों का विश्वसनीय होना → चूँकि ग्राहकों के द्वारा लिखी हुई पुरजियों के आधार पर बैंक की पुस्तक में लेखे किये जाते हैं इसलिए इन लेखो को अत्यंत विश्वनीय रखा जाता है। यदि कोई भी ग्राहक अपनी जमा या नाम से संबंधित किसी भी राशि पर अपना असंतोष प्रकट करता है तो उसी के द्वारा लिखी पुरजी दिखायी जाती है।

(f) प्रारम्भिक लेखे की पुस्तक में बचत होना → चूँकि बैंक की खातबही में अन्य पुस्तकों में पुरजियों के आधार पर लेखे किये जाते हैं इसलिए अन्य व्यापारियों की तरह प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकें रखने की आवश्यकता बैंक को नहीं पड़ती है।

* बैंक पुस्तपालन पुरजी पद्धति के दोष :-

(a) पुरजियों को रखने में कठिनाई → बैंक में प्रत्येक दिन बहुत से व्यवहार होने के कारण पुरजियों की संख्या इतनी अधिक होती है कि इन्हें सावधानी से रखना एक कठिन समस्या हो जाती है। इनके रखते समय यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि ये तारीखवार या सिलसिलेवार इस प्रकार रखे जायें ताकि आवश्यकता पड़ने पर इन्हें तुरन्त देखा जा सके।

(b) पुरजियों को खोने या नष्ट होने का भय → चूँकि पुरजियाँ खुली होती हैं तथा आकार में छोटी होती है, इसलिए इनके खोने को नष्ट होने का भय रहता है, परन्तु यह भय बैंक द्वारा पुरजियों को सावधानी से रखकर दूर किया जा सकता है।

(c) गबन की संभावना होना → यदि कोई कर्मचारी बेईमान है तो वह इन पुरजियों को नष्ट करके या इनमें बढ़कर गबन कर सकता है।

Scanned with CamScanner

(v) ग्राहकों को असुविधा होना → जब ग्राहक बैंक जाता है उसे बहुधा अपने कार्य समाप्त करने की जल्दी रहती है और जब उसे वहाँ पुरजी भरने को कहा जाता है तो प्रथम इसके विभिन्न खानों को भरने में उसे कठिनाई होती है और द्वितीय अकारण ही उसे अपना समय इस कार्य के करने में नष्ट करना पड़ता है। इस कष्ट को दूर करने के बैंक के कर्मचारियों को ग्राहक के मौखिक आदेशों के अनुसार पुरजियों को भरना चाहिए और ग्राहकों से केवल हस्ताक्षर लेने चाहिए। ऐसा होने से ग्राहकों को एक बहुत बड़ा बोझ कम हो जायेगा।

इससे यह स्पष्ट होता है कि बैंक प्रबन्धन में पुरजी पद्धति अत्यंत आवश्यक है जिससे कि ग्राहकों को कभी असुविधा हो तो अपने लेखों को देख सके।

—o—

Scanned with CamScanner